International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 379-384

प्राचीन भारतीय जनजातीय सिक्के

डॉ. चौधुरी शिवव्रत महान्ति
निदेशक, कृष्णराव शोध संस्थान, अतिथि विद्वान, प्राचीन इतिहास, रानी दुर्गावती विश्व विद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

जन से तात्पर्य समूह से है अर्थात् वे जातियाँ जो समूहों में बसती थीं उनकी गणना जनजाति के अन्तर्गत की गई है। जनजाति अथवा उनसे सम्बन्धित वंश जहाँ बसता था, उसी के नाम पर प्रदेश अथवा प्रान्त का नाम पड़ जाता था। ऐसे राज्यों को 'जन' अथवा 'जातीय' राज्य कहा जाता था, राज्य की कल्पना जाति पर आधारित थी। छठी शताब्दी ई.पू. के प्रारम्भिक चरणों में भारत का भूभाग अनेक छोटे–बड़े राज्यों में विभाजित था जिसमें राजतंत्रात्मक ही नहीं जनजातीय राज्य भी थे। जनजाति राज्यों द्वारा अनेक प्रकार के सिक्के प्रचलित किए गए जिनपर गण शब्द लिखा हुआ पाया जाता है, इसी आधार पर इन राज्यों को गणराज्य भी कहा जाता है।

प्रारम्भिक जनजातियाँ

बुद्धकाल में बौद्ध ग्रंथों में उल्लिखित सोलह महाजनपदों में (जिसमें वज्जि एवं मल्ल को छोड़कर शेष राजतंत्रात्मक थे) के साथ–साथ गंगाघाटी में अनेक गणराज्य भी स्थित थे। पालि ग्रंथों में ऐसे दस गणराज्यों का उल्लेख मिलता है जो निम्नलिखित थे1 –

1. कपिलवस्तु के शाक्य,
2. रामग्राम के कोलिय,
3. पिप्पलिवन के मोरिय,
4. कुशीनारा के मल्ल,
5. पावा के मल्ल,
6. अलकप्प के बुलि,
7. केसपुत्त के कालाम
8. मिथिला के विदेह,
9. सुंसुमारगिरि के भग्ग एवं
10. वैशाली के लिच्छवि

यौधेयों की मुद्राएँ

पुरातात्त्विक उत्खननों में लगभग दो दर्जन स्थानों से यौधेयों की मुद्राएँ प्राप्त हुई हैं। सर्वप्रथम 1834 ई. में कैप्टन काटले को सहारनपुर के निकट बेहट से यौधेयों की मुद्राएँ प्राप्त हुई थीं। तदुपरान्त कन्निंघम महोदय को हरियाणा, पंजाब एवं दिल्ली क्षेत्र से यौधेयों की मुद्राएँ प्राप्त हुई। दिल्ली के निकटवर्ती क्षेत्रों कांगड़ा, सोनपत, सुनेत, हस्तिनापुर, पुराना किला, रोहतक, सतलज के तटवर्ती क्षेत्र– सतग्रह, देपालपुर, अजोधन, कहरोर, मुल्तान, इसके पश्चिम में भटनर, पानीपत, अभीर, सिरसा, हॉसी, जैजेवन्ती आदि स्थानों से भी यौधेयों की मुद्राएँ मिली हैं।[1] उत्तरप्रदेश से देहरादून, पन्जया एवं गढ़वाल क्षेत्रों से यौधेयों की मुद्राएँ मिली हैं। राजस्थान के सम्भर, रंगमहल एवं पल्लू से भी यौधेयों की मुद्राएँ मिली हैं।[2] यौधेयों की मुद्राओं के प्राप्त होने वाले स्थलों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान सुनेत, रोहतक, सोनपत, खोखराकोट एवं नवरंगाबाद हैं। यह उल्लेखनीय है कि इन स्थलों से न केवल यौधेयों की मुद्राएँ वरन् यौधेय मुद्राओं के साँचे भी मिले हैं। इन साक्ष्यों से यह निष्कर्ष निकला जा सकता है कि इन स्थलों पर यौधेयों के टकसाल रहे होंगे। सुनेत से प्राप्त यौधेय मुद्रा के साँचों पर ब्राह्मी में यौधेयानाम जयमंत्र धराणाम् लेख प्राप्त होता है। 1936 ई. में बीरबल साहनी को रोहतक के निकट स्थित खोखराकोट से ब्राह्मी में योधेयानाम् बहुधन्जके लेखयुक्त साँचा मिला है।[3] हरियाणा में भिवानी के निकट नौरंगाबाद से प्राप्त यौधेय मुद्रा के साँचे पर यौधेयानाम् लेख उत्कीर्ण प्राप्त होता है।[4] इसी प्रकार बीरबल साहनी को गुप्तकालीन ब्राह्मी में यौधेय जनपद लेखयुक्त मृण्मुद्रा रोहतक से प्राप्त हुई, जो रोहतक में झज्जर संग्रहालय में संरक्षित हैं।[5] यहीं से बड़ी संख्या में मुद्रा भी प्राप्त हुई हैं। महाभारत के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि रोहतक एवं उसका निकटवर्ती क्षेत्र यौधेयों की शक्ति का प्रमुख केन्द्र था। महाभारत में रोहतक का उल्लेख हुआ है। महाभारत के अनुसार रोहतक निवासियों अर्थात् यौधेयों का लोकप्रिय देवता कार्तिकेय था। रोहतक निवासी मत्तमयूर कहे कहलाते थे, मयूर कार्तिकेय का वाहन है। स्पष्ट है कि यौधेयों की अधिकांश मुद्राओं पर कार्त्तिकेय का अंकन मुख्यरूप से हुआ है। यौधेयों की मुद्राएँ एवं मुद्रा साँचे रोहतक से बड़ी संख्या में मिले हैं। अतः ऐसा प्रतीत होता है कि महाभारत में उल्लिखित कार्त्तिकेय से सम्बद्ध प्राचीन रोहतक आधुनिक रोहतक ही है जो यौधेयों की प्राचीन भूमि थी।

उक्त तथ्यों से यौधेयों की नियमित मुद्रा प्रचलन का ज्ञान तो होता ही है, साथ ही यह भी स्पष्ट होता है कि हरियाणा, पंजाब एवं पश्चिमी उत्तरप्रदेश यौधेयों की शक्ति के प्रमुख केन्द्र थे। कन्निंघम के मतानुसार यौधेयों का मूल निवास स्थान पाकिस्तान के बहावलपुर राज्य में सतलज के धनी जोहियों में प्राचीन योधेयों के अवशेषों को पाया जा सकता है।[6]

इनकी मुद्राएँ रजत, ताम्र एवं पोटीन, तीनों धातुओं की बनी प्राप्त हुई हैं। मेरठ के निकटवर्ती क्षेत्र से कुछ ऐसी ताम्र मुदाएँ भी प्राप्त हुई हैं जिन पर रजत की कलई की गई थी। ये मुद्राएँ वृत्ताकार एवं वर्गाकार दोनों आकारों में प्राप्त हुई हैं।

यौधेयों की मुद्राओं का वर्गीकरण विद्वानों ने अनेक प्रकार से किया है। के.डी. बाजपेयी इन मुद्राओं को तीन वर्गों में वर्गीकृत किया है– 1. वृषभ–गज प्रकार 2. षड्मुख कार्त्तिकेय प्रकार 3. कार्तिकेय–देवसेना प्रकार। एलन ने प्रथम वर्ग की मुद्राओं को उन पर अंकित चिन्हों के आधार पर पाँच उपवर्गों में विभाजित किया है। प्रथम वर्ग के उप प्रकार – प्रथम वर्ग के उप प्रकार में 5 प्रकार हैं– अग्रभाग– इस श्रेणी के सिक्कों के अग्रभाग पर वेदिका सहित वृक्ष, उज्जैयनी चिह्न, षडरचक्र आदि का अंकन किया गया है।

पृष्ठभाग– पृष्ठभाग सामान्यतया सादा है।

पाँचों उप प्रकारों में एक उपवर्ग पर 'महाराजस' लेख मिलता है। शेष उप प्रकार लेख विहीन हैं। उनका पृष्ठ भाग सादा है। के.डी. वाजपेयी 'महाराजस' लेखयुक्त मुद्राओं को कौशाम्बी की मुद्राओं के

साथ रखने के पक्षधर हैं। वाजपेयी का मानना है कि यौधेयों की मुद्राओं पर 'महाराज' उपाधियुक्त लेख प्राप्त नहीं होता जबकि कौशाम्बी से महाराज लेख अंकित मुद्राएँ प्राप्त होती हैं। इन मुद्राओं पर अंकित कुछ प्रतीक भी कौशाम्बी की मुद्राओं पर प्राप्त होते हैं। परन्तु स्पष्ट है कि इसी प्रकार के कुछ चिह्न यौधेयों के द्वितीय वर्ग की मुद्राओं पर भी प्राप्त होते हैं। साथ ही ये मुद्राएँ यौधेयों के द्वितीय वर्ग की मुद्राओं के साथ प्राप्त हुई हैं। विजयगढ़ से प्राप्त अभिलेख में यौधेय शासक के लिए महाराज महासेनापति विशेषण का प्रयोग किया गया है। अतः वाजपेयीजी का मत तर्कसंगत नहीं प्रतीत होता है। मुद्रा पर लिखित लेख की लिपि प्रथम शताब्दी ई.पू. की है।

वर्ग दो की मुद्राएँ

इस वर्ग के अन्तर्गत ताम्र एवं पोटीन धातु से निर्मित लेखयुक्त मुद्राएँ आती हैं। इस वर्ग की मुद्राओं को एलन महोदय ने मुख्यतः तीन उपवर्गों में विभाजित किया है। इनके पृष्ठ भाग पर दाहिनी ओर गज स्थित है। ऊपर नन्दी पद पीछे अस्पष्ट चिह्न है। किसी–किसी मुद्रा पर गज का अंकन तथा नन्दिपद तथा अनिश्चित चिह्न है।

यौधेयों के इस वर्ग की मुद्राएँ आर्जुनायन मुद्राओं के समान दिखलाई देती हैं। उप प्रकार स की मुद्रा को भिन्न वर्ग में इसलिए रखा गया है कि कुछ मुद्राशास्त्रियों द्वारा इसकी निश्चित पुष्टि नहीं हो पाई है, मुद्राओं में बहुत समानता दिखलाई देती है। इस वर्ग की मुद्राओं के अग्रभाग पर के लेख के सम्बन्ध में मुद्राशास्त्रियों में मतभेद है। यौधेयानाम के बाद के अंश का पाठ विद्वानों ने भिन्न–भिन्न प्रकार से किया है– कृपुधनव, भूपधनुस, भूमिधनुस, बहुधान्यके। ज्ञात हो कि बहुधान्यक का उल्लेख महाभारत में नकुल विजय के सन्दर्भ में प्राप्त होता है। अधिकांशतः विद्वानों ने बहुधान्यक प्रदेश का समीकरण आधुनिक रोहतक एवं उसके निकटवर्ती क्षेत्रों के साथ की है, जो यौधेयों की गतिविधियों का क्षेत्र था। अतः अधितर विद्वान बहुधान्यक पाठ को ही स्वीकार करते हैं।

वर्ग तीन की मुद्राएँ

इस वर्ग की मुद्राएँ ताम्र एवं रजत दोनों धातुओं की बनी हुई प्राप्त हाती हैं परन्तु इस वर्ग की ताम्र मुद्राएँ अधिक संख्या में प्राप्त हुई हैं। अधिकांश मुद्राएँ उत्तरप्रदेश के पन्जया, देहरादून एवं गढ़वाल जिले से प्राप्त हुई हैं। इस वर्ग की मुद्राएँ सामान्यतया कुणिन्द मुद्राओं से समानता रखती हैं। इन मुद्राओं को निम्नलिखित दस उपवर्गों में विभक्त किया जा सकता है–

1. **अग्रभागः** स्थानक मुद्रा में दाहिने हाथ में भाला धारण किये हुये षडानन कार्तिकेय का अंकन है। उनका बाँया हाथ खाली है एवं पीछे की ओर अवस्थित।
   ब्राह्मी में लेख– भगवत स्वामिनों ब्रह्मण्ययौधेय
   पृष्ठभागः पद्म पर खड़ी देवी का अंकन है, देवी के दोनों पार्शों पर चिह्न तथा नीचे सर्पाकार रेखा है।
   रजत की एक मुद्रा के पृष्ठ भाग पर षडानन देवी का अंकन है। वासुदेव शरण अग्रवाल महोदय ने पृष्ठ भाग की देवी की पहचान षष्ठी देवी के रूप में स्वीकारा है, जो कार्तिकेय की पत्नी है। एलन महोदय ने पृष्ठ भाग की इस देवी को लक्ष्मी माना है।
2. **अग्रभागः** पूर्ववत। लेख ब्राह्मी में– भगवतस स्वामिनो ब्रह्मण्यदेवस्य कुमारस्य।
   पृष्ठभागः प्रभामण्डल युक्त देवी का दाहिना हाथ ऊपर उठा हुआ है तथा बायाँ पीछे की ओर अवलम्बित है।
3. **अग्रभागः** प्रभामण्डल युक्त एक मुखी कार्तिकेय का अंकन, लेख अधूरा एवं अस्पष्ट।
   पृष्टभागः वेदिकासहित वृक्ष, चैत्य, चैत्य के ऊपर त्रिरत्न तथा देवी का अंकन।
4. **अग्रभागः** दाहिना हाथ ऊपर किये हुये देवी का अंकन, देवी का बायाँ हाथ पीछे की ओर अवस्थित है।
   पृष्ठभागः वेदिका सहित वृक्ष, चैत्य, चैत्य के ऊपर त्रिरत्न का अंकन, षडानन कार्तिकेय का अंकन।
5. **अग्रभागः** भाला धारण किये हुये षडानन कार्तिकेय का अंकन है। लेख– अधूरा एवं अस्पष्ट है।
   पृष्ठभागः चैत्य, चैत्य के ऊपर उल्टा टी, वेदिकासहित वृक्ष, हिन्दी का अक्षर ठ, स्वास्तिक, अंग्रेजी का अक्षर एस, सर्पिलाकार रेखा तथा हिरण का अंकन है।
6. **अग्रभागः** शडानन कार्तिकेय का अंकन है, कार्तिकेय का दाहिना हाथ ऊपर की ओर उठा हुआ है एवं बायाँ हाथ पीछे की ओर अवस्थित है। दाहिनी ओर भाले का अंकन है। लेख – अधूरा एवं अस्पष्ट।
   पृष्ठभागः वेदिकासहित वृक्ष, चैत्य, चैत्य के ऊपर त्रिरत्न, अंग्रेजी का एस, हिन्दी का अक्षर ठ तथा हिरण का अंकन है।
7. **अग्रभागः** लेख जो अधूरा एवं अस्पष्ट है।
   पृष्ठभागः चैत्य, चैत्य के ऊपर टी अक्षर, वेदिकासहित वृक्ष, नीचे सर्पिलाकार रेखा तथा हिरण का अंकन है।
8. **अग्रभागः** पूर्ववत, लेख अस्पष्ट एवं अधूरा।
   पृष्ठभागः वेदिकासहित वृक्ष, चैत्य, चैत्य के ऊपर चिरत्न, स्वास्तिक, हिन्दी क अक्षर ठ का अंकन है।
9. **अग्रभागः** पूर्ववत।
   पृष्ठभागः चैत्य, चैत्य के ऊपर टी, हिन्दी का ठ, हिरण एवं उसके ऊपर चिह्न का अंकन है।
10. **अग्रभागः** कुल्हाड़ी युक्त त्रिशूल धारण किये हुये शिव का अंकन।
    पृष्ठभागः चैत्य, चैत्य के सम्मुख हिरण का अंकन।

वर्ग चार की मुद्राएँ

वर्ग चार की मुद्राएँ भी ताम्र की हैं परन्तु आकार में वे वृत्ताकार हैं। इस वर्ग की मुद्राओं पर 'यौधेय' नामांकित लेख नहीं है। परन्तु यौधेयों की मुद्राओं के साथ प्राप्त होने के कारण वे इन्हीं के सिक्के माने जाते हैं। इन मुद्राओं के अग्रभाग पर अर्धचन्द्रयुक्त चैत्य तथा विशेष प्रकार का स्वास्तिक का अंकन है तथा भनुवस अथवा रावणस लिखा लेख मिलता है।

पृष्ठभाग पर कुल्हाड़ीयुक्त त्रिशूल अथवा ध्वज दण्ड का अंकन है।[7] मुद्रा के कतिपय उपप्रकारों के पुरोभाग पर 'राजानों भनुवस' लेख प्राप्त होता है।

वर्ग पाँच की मुद्राएँ

ताम्रनिर्मित वर्ग की मुद्राएँ वर्गाकार हैं। इनके अग्रभाग पर वृषभ के ऊपर 'यौधेयानाम' लेख अंकित है। पृष्ठभाग अस्पष्ट है।

वर्ग छः की मुद्राएँ

वर्ग छः की मुद्राओं के अग्रभाग पर भी स्थानक कार्तिकेय भाला लिए हुए प्रदर्शित किए गए हैं। उनका दायाँ हाथ कमर पर अवस्थित है। पैर के निकट मयूर जैसे पक्षी का अंकन है। इस वर्ग की मुद्राएँ 'यौधेयगणस्य जयः' लेखांकित हैं। पृष्ठभाग पर कट्यावलम्बित देवी की दायीं भुजा ऊपर की ओर प्रक्षेपित है। इस वर्ग की मुद्राओं को एलन ने चार वर्गों में विभाजित किया है। मुद्रा

के कुछ उपवर्गों के पुरोभाग पर 'यौधेयगणस्य जयः देव' लेख प्राप्त होता है। पृष्ठभाग पर उल्टा त्रिशूल अथवा नन्दीपद का अंकन पाया जाता है।

बेला लहरी ने यौधेयों की मुद्राओं का विस्तृत अध्ययन किया है। उन्होंने न केवल यौधेय मुद्राओं का नए सिरे से वर्गीकरण किया है वरन् कुछ अन्य प्रकारों की ओर भी मुद्राशास्त्रकारों का ध्यान खींचा है। उन्होंने वर्ग तीन एवं चार की मुद्राओं को एक ही वर्ग में रखा है साथ ही ब्राह्मी में 'रावणस्य' लेख युक्त एक भिन्न प्रकार की मुद्रा एवं उसके उपप्रकारों का उल्लेख भी किया है। जिसके पुरोभाग पर स्थानक मुद्रा में देवी का अंकन एवं पृष्ठभाग पर पुरुष आकृति का अंकन है। इसके कुछ उपप्रकारों पर लेख के साथ कुछ चिह्नों का अंकन भी किया हुआ है।[8]

वासुदेव उपाध्याय के मतानुसार उनके सिक्के पूर्वी पंजाब, सतलज तथा यमुना नदियों के मध्य रोहतक जिले में प्राप्त होते हैं। कालक्रम के आधार पर यौधेयगण के सिक्के तीन भागों में विभक्त किए गए हैं। पहला ई.पू. 300 का, जिसे नन्दि तथा हाथी प्राकर का सिक्का कहा जाता है।

ताम्र सिक्का

अग्रभागः नन्दि के सम्मुख स्तम्भ है एवं ब्राह्मी लिपि में 'यौधेयानां बहुधान्यक' या 'भूमिधनुष' लिखा हुआ है।

पृष्ठभागः हाथी तथा नन्दिपद का चिह्न है।

दूसरे कालक्रम में रजत निर्मित सिक्का ईसा पूर्व प्रथम सदी का है। इसके अग्रभाग पर षडानन कार्तिकेय की आकृति को कमल पर खड़ी दिखलाई गई है। उसी ओर ब्रह्मी लिपि में यौधेयों के 'ब्रह्मण्यदेव, यौधेयानां भगवतो स्वामिनो ब्रह्मणस्य' लेख अंकित है। ताम्र सिक्कों पर 'भगवतो स्वामिनो ब्रह्मणस्य देवस्य कुमारस्य' लेख लिखा मिलता है। ब्रह्मण्यदेव के स्थान पर कार्तिकेय का नाम कुमार लिखा हुआ है। इससे स्पष्ट होता है कि युद्ध के प्रेमी यौधेय लोगों ने कार्तिकेय का नाम सिक्कों पर अंकित करवाया था। इसके पृष्ठभाग पर बोधिवृक्ष, चैत्य, नन्दिपाद चिह्न तथा कौमारी देवी की आकृतियाँ हैं। सभी लेखों को मिलाकर 'भगवतः स्वामिनो ब्रह्मण्यदेव' बनता है।[9]

दूसरे प्रकार के एकमुखी कार्तिकेय अंकित सिक्के पर नाम के साथ द्रम शब्द लिखा हुआ है। दोनों ओर चिह्न वही हैं, परन्तु लेख 'ब्रह्मण्यदेवस्य द्रम' लिखा हुआ है। घ्यान देने वाली बात यह है कि सिक्के पर द्रम शब्द का अंकन है।

तीसरे कालक्रम के सिक्के कुषाण सिक्को के अनुकरण पर तैयार किए गए हैं।

अग्रभागः शूल लिए राजा या कार्तिकेय की आकृति तथा बाईं ओर मयूर, ब्राह्मी लिपि में 'यौधेयगणस्य जय' अथवा 'यौधेयानां गणस्य जयः' लिखा हुआ मिलता है। इसी ओर कुछ सिक्कों पर संख्यावाचक द्वि अथवा तृ लिखा हुआ मिलता है। बहुत सम्भव है कि यह संख्या यौधेय जाति के दूसरे अथवा तीसरे गण का बोधक है।

पृष्ठभागः देव आकृति जो कुषाण सिक्कों पर अंकित सूर्य की आकृति के सदृश है।

आर्जुनायन गण की मुद्राएँ

आर्जुनायनों का शासन क्षेत्र दिल्ली, जयपुर एवं आगरा का त्रिकोणीय क्षेत्र अर्थात् प्राचीन मत्स्य जनपद था। इनकी मुद्राएँ सीमित सीमित संख्या में प्राप्त हुई हैं। इनकी मुद्राओं पर संस्कृत भाषा एवं ब्राह्मी लिपि में लेख उत्कीर्ण है जिनकी लिपि प्रथम शती ई.पू. की प्रतीत होती है। इनकी मुद्राएँ प्रायः एक ही प्रकार की प्राप्त हुई हैं, जिन्हें एलन महोदय ने निम्नलिखित तीन उपवर्गों में विभक्त किया है–

प्रथम वर्ग की मुद्राएँ[10]

अग्रभागः पर्वत के ऊपर वृषभ का अंकन किया गया है।

पृष्ठभागः वेदिका सहित वृक्ष के मध्य मानव आकृति है तथा ब्राह्मी लिपि में लेख– अर्जुनायनन लिखा हुआ है।

द्वितीय उपवर्ग की मुद्राएँ[11]

अग्रभागः इस प्राकार के सिक्कों पर वृक्ष के सम्मुख वृषभ अंकित है।

पृष्ठभागः सिक्कों पर सामने की ओर वृषभ का अंकन है, ब्राह्मी लिपि एवं संस्कृत भाषा में लेख आर्जुनायनम जय लिखा हुआ है। उल्लेखनीय है कि अनेक सन्दर्भों में आर्जुनायनों एवं यौधेयों का उल्लेख साथ–साथ हुआ है अतः यौधेयों के समान इनका भी गणराज्य था।

तृतीय वर्ग की मुद्राएँ

अग्रभागः इस प्रकार की मुद्राओं पर वृषभ की अस्पष्ट आकृति है।

पृष्ठभागः वज्र का अंकन एवं ब्राह्मी लिपि में अत्यन्त अस्पष्ट लेख– आज्रनायनम् लिखा हुआ है।

मालवगण की मुद्राएँ

शताब्दियों तक कुषाणों एवं पश्चिमी क्षत्रपों के दबाव में रहते हुए इन्होंने तीसरी शताब्दी ई. के मध्य तक स्वतंत्र गणराज्य की स्थापना कर ली। उक्त सूचना नान्दसा यूप स्तम्भ अभिलेख [12] से प्राप्त होती है।

मालवगण की मुद्राएँ जयपुर के कर्कोटनगर तथा रेहड़ से प्राप्त हुई हैं। रेहड़ नामक स्थान से मिले सीसा धातु की मुहर पर अंकित लेख मालव–जनपद इस तथ्य का सूचक है कि यह क्षेत्र ही इनके राज्य के अन्तर्गत था। इनकी मुद्राएँ लेख एवं प्रतीकों की विविधता से युक्त हैं। 66 मालवगण की मुद्राओं पर मयूर, वृषभ, चैत्य, वृक्ष, कलश, सिंह आदि अनेक चिह्न अंकित हैं। लेखों के आधार पर इनकी मुद्राओं को दो वर्गों में रखा जा सकता है। इनकी मुद्राओं का कन्निंघम[13], स्मिथ[14], आर. वो. दुगल[15] एवं जायसवाल ने अध्ययन किया है। एक वर्ग में उन मुद्राओ को रखा जा सकता है जिन पर मालवानां, मालवानां जय, जय मालवानां, मालवह्ण जय, मालव जय, मालव सुजय आदि लेख उत्कीर्ण हैं। दूसरे वर्ग में उन मुद्राओं को रखा गया है जिनपर यम, मपंयन, मपजय, मपयजस, जय, मपय, मगज, मगजस, मगोजव, गोजर, माशय, मयक, पच्छ, मगच्छ, जायक, पथ, महराय, भरज आदि लेख अंकित हैं। स्मिथ ने बीस प्रकार के तथा कार्लाइल ने ऐसे चालीस प्रकार के लेख पढ़े हैं। कार्लाइल तथा स्मिथ इन्हें शासकों का नाम मानते हैं जब कि एलन ने असहमति व्यक्त की है। वस्तुतः वर्तमान ज्ञान की अवस्था में इन लेखों को अर्थ दे पाना कठिन है।

उक्त से सर्वथा भिन्न चौकोर ढंग से सिक्के भी हैं, जिन पर मालव जाति का नाम अथवा राजा का नाम खुदा हुआ है। प्रायः सिक्कों में चालीस राजाओं के नाम मिलते हैं। गजप, मजुप, जामक, मपक, पय इत्यादि विचित्र नामों के साथ महराय नाम भी आता है, नामों में म को महाराजा समझा जा सकता है। स्मिथ ने अपने सूची पत्र में ऐसे सिक्कों की सूची दी है जिन पर कोई लेख नहीं है परन्तु कलश अथवा वृक्ष की आकृति मिलती है। नन्दी की आकृति भी मिली है। इसलिए बनावट की दृष्टि से इनको मालव सिक्कों के

अन्तर्गत रखा जा सकता है।

औदुम्बरगण की मुद्राएँ

औदुम्बर मुद्राओं की सर्वप्रथम प्राप्ति कन्निंघम महोदय को पठानकोट से हुई थी। बाद में कांगड़ा जिले के विभिन्न क्षेत्रों – गुरुदासपुर, इरीप्यालपुर, होशियारपुर से भी सिक्के प्राप्त हुए।

औदुम्बरगण की ताम्र एवं रजत दोनों ही धातुओं में मुद्राएँ प्राप्त हुई हैं। इनकी मुद्राओं को प्रमुखरूप से निम्नलिखित तीन वर्गों में विभक्त किया जा सकता है–

1. ताम्र की चौकोर मुद्राएँ,
2. ताम्र की वृत्ताकार मुद्राएँ तथा
3. रजत की वृत्ताकार मुद्राएँ।

ताम्र की चौकोर मुद्राएँ ही औदुम्बरगण की प्राचीनतम मुद्राएँ हैं। इन मुद्राओं पर विदेशी प्रभाव नहीं दिखलाई देता है। ये मुद्राएँ मुख्यरूप से कांगड़ा जिले के दूरीप्याल एवं पठानकोट क्षेत्र से प्राप्त हुई हैं। इन मुद्राओं के अग्रभाग पर वेदिका में लम्बा वृक्ष है। जिसकी पहचान कन्निंघम ने गूलर के वक्ष से की है। वृक्ष के दाहिनी ओर गज के अग्रभाग का अंकन है एवं नीचे सर्पाकार रेखा है। पृष्ठभाग पर स्तम्भयुक्त दो मंजिला आयताकार वास्तु का अंकन है, यह अंकन तत्कालीन वास्तुकला की अभिव्यक्ति करता है। इन वास्तु के बगल में कुल्हाड़ी युक्त त्रिशूल का अंकन है। मुद्रा के अग्रभाग पर खरोष्ठी लिपि में एवं पृष्ठभाग पर ब्राह्मी लिपि में लेख लिखा हुआ है–

1. महदेवस सिवदसस उदुम्बरिस,
2. महदेवस रन्य रुद्रमस उदुम्बरिस,
3. महदेवस रन्य घोषस,
4. महदेवस रन्य उदुम्बरिस।

पृष्ठभाग पर अग्रभाग के लेख का ही ब्राह्मी लिपि में रूपान्तर प्राप्त होता है प्रायः सभी मुद्राओं पर महादेव राजा की उपाधि एवं उदुम्बरिस कबिलाई नाम प्राप्त होता है। इन मुद्राओं की लिपि प्रथम शताब्दी ई.पू. के लगभग की मानी जा सकती है। उल्लेखनीय है कि उपर्युक्त चार शासकों में से केवल धरघोष एवं महादेव की मुद्राएँ ही रजत एवं ताम्र दोनों प्रकार की धातुओं में प्राप्त होती हैं। महादेव की रजत मुद्राओं पर कमलपुष्प के अग्रभाग पर कुकुदमान वृषभ एवं कमलपुष्प का अंकन प्राप्त होता है।[16] कतिपय मुद्राओं पर कमलपुष्प के स्थान पर नन्दीपद एवं बिन्दुत परिधि का अंकन प्राप्त होता है।[17] अग्रभाग पर भगवत महादेव रन्य लेख प्राप्त होता है। मुद्रा के पृष्ठभाग पर गज एवं कुल्हाड़ी युक्त त्रिशूल का अंकन प्राप्त होता है। अग्रभाग पर वृषभ एवं पृष्ठभाग पर गज अंकित है। महादेव की मुद्राएँ अपोलोडोटस की मुद्राओं से बहुत सीमा तक समानता रखती हैं। इन मुद्राओं पर स्पष्टतः यूनानी प्रभाव दिखलाई देता है।

धरघोष की रजत मुद्राओं[18] के अग्रभाग पर स्थानक मुद्रा में दाढ़ी युक्त पुरुष की आकृति है। पुरुष का दाहिना हाथ ऊपर की ओर उठा हुआ स्थित है। यह पुरुष यूनानी देवता हेरेक्लीज के समान है। परन्तु इस पुरुष के हाथ में गदा एवं व्याघ्रचर्म का अंकन नहीं हुआ है। मुद्रा पर यूनानी प्रभाव स्पष्टरूप से परिलक्षित होता है। यह मुद्रा लिसिआस की उन अर्धद्रम मुद्राओं के समान है जिस पर मुकुट धारण किए हुए हेरेक्लीज का अंकन है। मुद्रा के अग्रभाग पर खरोष्ठी लिपि में विस्पमित्र महदेवस रन्य धरघोसस उदुम्बरिस लेख है। चूँकि भारतीय अनुश्रुतियों में औदुम्बरगण के पूर्वज के रूप में विश्वामित्र का उल्लेख प्राप्त होता है। अतः मुद्राशास्त्रियों का विचार है कि अग्रभाग के पुरुष की पहचान विश्वामित्र के रूप में करनी चाहिये।

रूद्रवर्मा नामक एक अन्य शासक की भी रजत मुद्रा प्राप्त हुई है।[19] मुद्राशास्त्रियों ने इस मुद्रा की पहचान औदुम्बर मुद्रा के रूप में की है। इस मुद्रा पर महादेव की रजत मुद्राओं के समान ही प्रतीकों का अंकन हुआ है। मुद्रा के अग्रभाग पर वृषभ एवं कमल पुष्प का अंकन किया गया है। अग्रभाग पर खरोष्ठी लिपि में लेख रन्य वमकिस रुद्रवर्मस विजयत अंकित है। पृष्ठभाग पर गल एवं कुल्हाड़ी युक्त त्रिशूल का अंकन है तथा ब्राह्मी लिपि में अग्रभाग के लेख का ही रूपान्तर प्राप्त होता है।

औदुम्बर मुद्राओं पर अंकित लेख महादेवस, भगवत महादेवस के आधार पर उनका शैव मतानुलम्बी होना अनुमानित होता है। उल्लेखनीय है कि लेख में राजा उपाधि भी है। अतः महादेव लेख को राजकीय उपाधि नहीं माना जा सकता है। मुद्रा के पृष्ठभाग का अंकन भी यह प्रमाणित करता है कि औदुम्बर शैव मतानुयायी थे। पृष्ठभाग के कुल्हाड़ी युक्त त्रिशूल एवं शिखर युक्त भवन के अंकन के आधार पर इस वास्तु के शिवमंदिर होने का अनुमान होता है। मुद्राओं पर शिव का प्रतीक वृषभ का अंकन भी इस अनुमान की पुष्टि करता है।

पंजाब के गुरुदासपुर तथा कांगड़ा में औदुम्बर सिक्कों का ढेर प्राप्त हुआ है। पहले वर्गाकार ताँबे के सिक्के इस गण ने तैयार कराए थे, वे सर्वथा भारतीय ढंग के हैं। औदुम्बर के सिक्कों पर खरोष्ठी लिपि में भी मुद्रा लेख है जो क्षत्रप के प्रभाव को दर्शाती है। इस गण के सिक्के यूनानी राजा अपलदत्त के अर्धद्रम के समान है। इनके सिक्के तीन श्रेणियों में विभक्त किए जा सकते हैं–

1. विश्वामित्र शैली,
2. हस्ती तथा मन्दिर प्रकार तथा
3. हस्ती एवं नन्दि प्रकार

आमतौर पर सिक्कों के अग्रभाग पर विश्वामित्र अथवा गज की आकृति के साथ खरोष्ठी लिपि में लेख महादेवस राज्ञोधरघोषस औदुम्बरिस अंकित है। कन्निंघम महोदय ने रुद्रवर्मन, अजमित्र, महीमित्र, भानुमित्र आदि शासकों के सिक्कों को औदुम्बर से सम्बद्ध माना है।[20]

चाँदी के सिक्के बहुत कम प्राप्त होते हैं। इसके चिह्न तथा धरघोष के नाम से स्पष्ट होता है कि यह औदुम्बर गण का सिक्का है। ये हिन्द–यवन सिक्कों के अर्धद्रम के अनुकरण पर तैयार किए गए थे। इन सिक्कों पर एक ओर मनुष्य की आकृति है। सम्भवतः कंधे पर बाघ का चर्म रखे शिव की आकृति है एवं खरोष्ठी लिपि में औदुम्बरिस लिखा है। राजा के नाम के अतिरिक्त निचले भाग में वेदिका सहित वृक्ष तथा त्रिशूल बना है। धरघोष महादेव का उपासक था अथवा महोदव औदुम्बर जाति के उपास्य देव थे। द्वितीय प्रकार का चाँदी का सिक्का महादेव सिक्के के ढंग का है, गज एवं त्रिशूल भी दिखाई देता है। इसी कारण इसे औदुम्बर गण का सिक्का माना जाता है।[21]

तीसरे प्रकार के वृत्ताकार ताँबे के सिक्के भी प्राप्त हुए हैं जो चिह्नों के आधार पर इस गण के माने जा सकते हैं। उन पर वदिका सहित वृक्ष, गज, त्रिशूल आदि दिखाई देते हैं जो औदुम्बर सिक्के से मिलते–जुलते हैं। इन पर द्वितलीय मन्दिर दिखलाई देता है एवं खरोष्ठी और ब्राह्मी लिपियों में राजाओं के नाम मिलते हैं। औदुम्बर गण के सिक्के से भारतीय मन्दिर वास्तुकला पर प्रकाश पड़ता है। उन पर मंदिर की आकृति मिलती है जिसके शीर्ष भाग पर छत्र भी है। समीप में ही परशु के साथ त्रिशूल बना रहता है। इससे यह सिद्ध होता है कि औदुम्बर शैव मतानुनायी थे।[22]

कुणिन्द गण की मुद्राएँ

कुणिन्द गण का अस्तित्व के सम्बन्ध में जानकारी उनकी मुद्राओं एवं साहित्यिक वर्णनों से होती है। इनकी रजत एवं ताम्र निर्मित मुद्राएँ कांगड़ा, हमीरपुर, लुधियाना, गढ़वाल, सहारनपुर आदि जनपदों से प्राप्त हुई हैं।

रजत मुद्राएँ

कुणिन्दों की रजत मुद्राएँ हिन्द–यवन मुद्राओं के अनुकरण पर निर्मित की गईं की गई प्रतीत होती हैं। परन्तु इन मुद्राओं पर अंकित चिह्न सर्वथा भारतीय हैं। हिन्द–यवन मुद्राओं का अनुकरण सम्भवतः पश्चिमी राज्यों के साथ व्यापार को ध्यान में रखकर किया गया होगा। इनकी रजत मुद्राओं के अग्रभाग पर ब्राह्मी में तथा पृष्ठभाग भाग खरोष्ठी लिपि में लेख प्राप्त होते हैं। खरोष्ठी लिपि का प्रयोग उत्तर पश्चिमी पंजाब के साथ इनके सम्बन्ध को सूचित करती है।

रजत मुद्राओं[23] के अग्रभाग पर सम्मुख खड़ी नारी की आकृति का अंकन है तथा उसके पार्श्व में मृग का अंकन हुआ है। नारी का बायाँ हाथ कटि पर अवलम्बित है एवं उसका दाहिना हाथ वरद मुद्रा में ऊपर की ओर उठा हुआ है। ब्राह्मी में राज्ञः कुणीदस्य अमोघभूतिस्य महरजस्य लेख उत्कीर्ण है। पृष्ठभाग पर स्वास्तिक, मेरू, इन्द्रयष्टि एवं वेदिका सहित वृक्ष आदि चिह्न अंकित हैं, मेरू के नीचे सर्पिल रेखा का अंकन हुआ है। खरोष्ठी में वृत्ताकार लेख है, पृष्ठभाग का लेख पुरोभाग के लेख का ही अनुवाद है।

ताम्र मुद्राएँ

रजत की मुद्राओं की तुलना में कुणिन्दों की ताम्र मुद्राएँ अधिक विभिन्ता लिये हुए हैं। 78 इसके अतिरिक्त ताम्र मुद्राओं की संख्या भी रजत मुद्राओं की अपेक्षा अधिक है। हिमालय में कांगड़ा एवं उसके समीप से प्राप्त कुणिन्द गढ़वाल तथा देहरादून के आस–पास के क्षेत्रों से प्राप्त ताम्र मुद्राओं की तुलना में प्राचीनतम प्रतीत होती है। लिपि शास्त्र के आधार पर ऐसा प्रतीत होता है कि कांगड़ा तथा आस–पास के क्षेत्रों से प्राप्त मुद्राएँ ई.पू. प्रथम शताब्दी की हैं आमतौर पर ये ताम्र मुद्राएँ एकभाषी हैं। इनके पृष्ठभाग पर खरोष्ठी लिपि के लेख का अभाव है। परन्तु अभी हाल ही में अम्बाला जनपद से 34 ऐसी मुद्राएँ मिली हैं जिनके पृष्ठभाग पर शासक के नाम परिवर्तन के साथ अग्रभाग के ब्राह्मी लेख का अनुवाद अंकित है। खरोष्ठी लिपि का लेख रजो कुणिदस प्रजापति अख्यस लिखा हुआ है।

कांगड़ा के समीप से प्राप्त ताम्र मुद्राओं पर स्थान परिवर्तन के साथ रजत मुद्राओं के चिह्न ही अंकित हैं। अग्रभाग पर कहीं सम्मुख खड़ी नारी की आकृति बाईं ओर मृग दाएँ अंकित है तो कुछ मुद्राओं पर मृग, नारी के बाएँ अंकित है। कुछ मुद्राओं पर वृक्ष का अंकन बाएँ है तथा स्वास्तिक एवं इन्द्रयष्टि दाएँ अंकित है। कतिपय मुद्राओं पर वृक्ष उल्टा भी अंकित है।

कुणिन्दों की गढ़वाल देहरादून के समीपी क्षेत्रों से प्राप्त ताम्र मुद्राओं के अग्रभाग पर त्रिशूल लिये स्थानक शिव की आकृति अंकित है एवं ब्राह्मी लिपि में भगवतः चित्रेश्वर महात्मनः लेख उत्कीर्ण है। पृष्ठभाग पर बाएँ मुख किये मृग के साथ चैत्य एवं वृक्ष का अंकन है। कुछ विद्वानों ने इस वर्ग की मुद्राओं पर उत्कीर्ण लेख को भगवतः छत्रेश्वर महात्मनः पढ़ा है। इस वर्ग की मुद्राएँ यौधेयों के कार्तिकेय प्रकार की मुद्राओं से निर्माण एवं आकार–प्रकार की दृष्टि से समानता रखती हैं। मुद्राओं के घनिष्ठ साम्यता के आधार पर ही अल्तेकर ने यह मत प्रतिपादित किया कि कुणिन्द एवं यौधेय समकालीन राज्य थे तथा उन्होंने तीसरी शताब्दी ईस्वी के आरम्भ में एक–दूसरे को सहयोग देते हुए कुषाणों के विरुद्ध विद्रोह में सफलता प्राप्त की।

बनावट की दृष्टि से कुणिन्दों की ताम्र मुद्राएँ दो वर्गों में विभाजित की जा सकती हैं। उनकी कुछ ताम्र मुद्राएँ उत्तम बनावट की हैं तथा कुछ भद्दे प्रकार की बनावट की। आकार तथा भार में भी इनमें भिन्नता है। अच्छी बनावट वाली मुद्राओं पर लेख स्पष्टतः अंकित है जब कि भद्दी आकृति वाली मुद्राओं पर लेख अस्पष्ट है।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि कुणीन्द गण ने दो प्रकार के सिक्के प्रचलित किए जो ई.पू. 150 से ईसवी 200 तक एवं मृगवाले सिक्के ई.पू. दूसरी सदी तक प्रचलित थे। इन मुद्राओं का वर्णन निम्नानुसार है–

अग्रभागः कमल सहित लक्ष्मी की आकृति, एक मृग, छत्र सहित वर्गाकार स्तूप तथा ब्राह्मी लिपि में अमोघभूतस महरजस राज्ञोकुणदस लिखा है। कुणिन्द शासक ने हिन्द–यवन राजाओं द्वारा प्रचलित चाँदी के सिक्कों की स्पर्धा में देशी ढंग से चाँदी का सिक्का तैयार कराया था।

पृष्ठभागः चैत्य, स्वास्तिक, नन्दिपद एवं वृक्ष बनाया गया है। खरोष्ठी लिपि में राज्ञो कुणीदस अमोघभूतिस महरजस लेख लिखा है।[25]

अमोघभूति के इसी प्रकार के ताँबे के सिक्के भी मिले हैं। जिनके अग्रभाग पर ब्राह्मी लिपि में तथा पृष्ठभाग पर खरोष्ठी लिपि में लेख लिखे मिलते हैं। बाद के सिक्कों पर राजा का वही नाम मिलता है, परन्तु केवल ब्राह्मी लिपि में। अमोघ के अतिरिक्त कुणिन्द की जाति के छतेश्वर नामक राजा का ताँबे का सिक्का प्राप्त हुआ है जिसके अग्रभाग पर त्रिशूल लिए शिव की आकृति बनी हुई है। लेख अस्पष्ट है, परन्तु रैप्सन ने उस पर भगवत छत्रेश्वर पढ़ा है। पृष्ठभाग पर हिरण, नन्दिपद, वृक्ष एवं सुमेरु पर्वत आदि की आकृति पाई गई हैं। यह सिक्का अमोघभूति के बाद का प्रतीत होता है।[26]

सन्दर्भ

1. जे. ए. एस. वी., 1834 एण्ड 1835 ए सी. ए. एस. आर., पृ.140, सी. ए. सी. 76, 79, सी. सी. वी. एम., जे. ए. एस. आई, पृ. 101–102.
2. ये मुद्राएँ जयपुर एवं बीकानेर संग्रहालय में प्रदर्शित हैं.
3. साहनी, बीरबल, टेक्लीक ऑफ कॉस्टिंग क्वायन्स इन एन्शियेन्ट इण्डिया, पृ. 1–32.
4. जे. एन. एस. आई., पृ. 85–87.
5. जे. एन. एस. आई., पृ. 201.
6. ए. एस. आर., पृ. 140, ए. जी. आई. 245.
7. एलन, कैटलाग प्लेट 40, मुद्रा संख्या–15.
8. वासुदेव उपाध्याय, प्राचीन भारतीय मुद्राएँ, पृ. 68.
9. एलन कैटलाग प्लेट नं. 14, मुद्रा सं. 10.
10. वही, मुद्रा सं. 13.
11. एपिग्राफिया इंडिका, शण्ड 27, पृ. 252.
12. आई. एम. सी. 1, प्लेट 20–17, टाइप 9, पृ. 60, आई. एम. सी. 1 पृ. 174–177.
13. ए. एस. आर., पृ. 149–151.
14. सी. आई. एम. 1, पृ. 160–164.
15. जे. ए. एस. बी. 1923, न्यूमिस्मेटिक सप्लीमेन्टरी, 37–237.
16. बी. एम. सी., 14–6.
17. बी. एम. सी. 14–17.
18. बी. एम. सी. 14–14–17.
19. बी. एम. सी. 14–13.

20. प्राचीन भारतीय मुद्राएँ, वासुदेवशरण उपाध्याय, पृ. 70 एवं 71.
21. वही.
22. वही.
23. बी. एम सी. प्लेट 22, मुद्रा संख्या—1.
24. बी. एम. सी. प्लेट—23 मुद्रा सं. 14, प्लेट 22—14, 16,15,9,10.
25. प्राचीन भारतीय मुद्राएँ, वासुदेवशरण उपाध्याय, पृ. 69 एवं 70.
26. वही.